पर्यावरण

मानसी ममगाईं
कक्षा : 7
सेंट थेरेसास स्कूल, श्रीनगर (गढ़वाल)

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है। परि+आवरण, अर्थात् हमारे चारों ओर की सभी सजीव तथा निर्जीव पदार्थ/वस्तुएं पर्यावरण के अंतर्गत आती हैं। ऐसी सभी वस्तुएं जिनसे मानव जीवन प्रभावित होता है तथा मनुष्य जिन वस्तुओं को प्रभावित करता है, सभी पर्यावरण में समाहित हैं। हमारे चारों ओर के सभी जीव–जंतु पेड़–पौधे, पानी, वायु, सूक्ष्म जीव आदि पर्यावरण का भाग हैं। हमें अपने चारों ओर के पर्यावरण को स्वच्छ रखना चाहिए। आज मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए इसे प्रदूषित कर दिया है। हमारे जल स्रोत प्रदूषित हो गए हैं। शहरों का कूड़ा–करकट, सीवर सीधे नदियों में बहाया जा रहा है। जिससे कई बीमारियां हो रही हैं। पलायन के कारण लोग गांवों को छोड़कर शहरों की ओर जा रहे हैं। वनों को काटकर सीमेंट–कंक्रीट के ढांचे बनाए जा रहे हैं। पेड़ वायुमंडल की कार्बन–डाइ–ऑक्साइड को लेकर ऑक्सीजन गैस छोड़ते हैं जो हमारे लिए प्राणवायु है। कारखानों का जहरीला धुआं और मोटर गाड़ियों का धुआं वायुमंडल में जहर घोल रहा है। ऑक्सीजन कम होने से अस्थमा जैसे श्वास संबंधी रोग हो रहे हैं। हरिद्वार जैसी धार्मिक नगरी में गंगा जल पूजा के योग्य रहीं रह गया है। नदियों पर बनने वाली जल विद्युत परियोनाएं गंगा की अविरलता को नष्ट कर रही हैं। वनों का अवैध कटान मानसून को प्रभावित करता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में किसानों द्वारा आत्महत्या की जाती है। यह मानवता पर कलंक है। गंगा अपने उद्गम स्थल से ही प्रदूषित हो चुकी है।

आइए हम संकल्प लें कि अपने पर्यावरण को स्वच्छ रखेंगे। खाली भूमि पर सघन वृक्षारोपण करेंगे ताकि जल स्रोत पुनः जीवित हो जाएं और भू–जल स्तर ऊंचा हो सके तथा समाज में सुख–समृद्धि आए।

"पर्यावरण दूषित मत करो
नहीं रहेंगे फिर इंसान
नदियों को बहने दो, पेड़ों को मत काटो
तभी बनेगा हमारा भारत महान।"